चतुर्थ अध्याय

" हिन्दी के विभाजनवादी उपन्यासों में "तमस" का स्थान "

4.1 प्रस्तावना -

4.2 विभाजनवादी उपन्यासों में युगीन समस्याएँ -

4.3 विभाजनवादी उपन्यास और "तमस" -

4.4 "तमस" उपन्यास की त्रुटियाँ और समाधान -

4.5 निष्कर्ष -

4.6 संदर्भ सूची -

- - -

चतुर्थ अध्याय

हिन्दी के विभाजनवादी उपन्यासों में "तमस" का स्थान

4.1 प्रस्तावना :-

साहित्य समाज का दर्पन माना जाता है। उसमें विभीन्न परिस्थितिसे उत्पन्न विचार, भावना, अन्त:प्रेरणा, मानवीय संवेदना प्रतिबिम्बित होती हैं। लेखक समाज का जीवन-चित्र इसमें उद्घाटित करता है। इसके लिए सामाजिक परिस्थितियाँ उसे प्रभावित करती है। साथ ही राजीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी सहायक होती है। युग की प्रतिछाया ही साहित्य हैं, जिसमें साहित्यकार अपने विचारों को उद्घाटित करता है। सामाजिक समस्याओं का गंभीर उद्घाटन भी किया जाता है। मानव संघर्ष की गाथा चित्रित की जाती है। उपन्यासकार का अनुभव क्षेत्र जितना विशाल और विस्तृत होता है उतना उपन्यास सफल बनता है।

साहित्यकार इतिहास को आधुनिक विचारों के आलोक में देख साहित्यका निर्माण करता है। हिन्दी साहित्य के महान उपन्यास सम्राट प्रेमचंद है। उन्होंने सामाजिक परंपरा का सीधा सरल चित्रण किया है। उसी प्रकार अन्य उपन्यासकारों ने सामाजिक समस्याओं का सफल चित्रण किया हैं। उनमें से भीष्म साहनी समर्थ उपन्यासकार है, जिन्होंने जन-जीवन और उसकी समस्याओं को वाणी प्रदान कर सांप्रदायिक मतवाद का उद्घाटन किया है।

भारत-पाक विभाजन की समस्या को लेकर भारत की सभी भाषाओं में उपन्यास तथा अन्य साहित्य लिखा गया हैं। विभाजन की घटना भारतीय इतिहास की त्रासदी है। धर्म के नामपर इस समय जो अत्याचार हुए वे अमानवीय थे। और उसकी प्रामाणिक अनुभूति साहित्यकारों के पास थी। विभाजन के समय देश की जो स्थिति थी वही साहित्य में चित्रित कर, युगीन समस्याओं का उद्घाटन अनेक

उपन्यासकारों ने किया है।

भारत विभाजन एक राजनीतिक घटना है। विभाजन के अनेक कारण हैं। जिसके लिए जिम्मेदार हैं धर्म, राजनीति, साम्राज्यवाद, सांप्रदायिक भिन्नता, मनुष्य स्वभाव, आर्थिक विषमता, स्वार्थान्धता, शोषण आदि। इन कारणों की सुक्ष्म खोज अनेक साहित्यकारों ने की है। और युगीन समस्याओं का उद्‌घाटन मानववादी भूमिका से करने का सफल प्रयास विभाजनवादी उपन्यासकारों ने किया है।

4.2 विभाजनवादी उपन्यासों में युगीन समस्याएँ :-

1) **ब्रिटिश साम्राज्य** - भारत का राष्ट्रवादी आन्दोलन एक करूण अध्याय है। उस समय भारतीय जनता को जो भुगतना पड़ा वह बहुत ही दर्दनाक है। इस राष्ट्रवादी आन्दोलन के अनेक कारण है। इनमें सबसे प्रमुख ब्रिटिश साम्राज्यवाद है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कारण ही भारतीय लोगों के मन में स्वराज्य के प्रति नवजागरण निर्माण हुआ। जिसके कारण पूरे देशमें असंतोष फैला। क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य केवल स्वार्थ देखता था, भारतीय जनता के हितों की उसे बिल्कुल चिंता नहीं थी।

2) **सांप्रदायिकता** - विभाजनवादी उपन्यासों में हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिक भावना का विस्तृत चित्रण अनेक लेखकों ने किया है। व्यक्ति-व्यक्ति की स्वार्थान्धता, कायरता, गरीबों का शोषण, धार्मिक अहंकार, राग, द्वेष, घृणा, लालच का चित्रण इनमें हैं।

व्यक्तियों के संकीर्ण विचारों से जो तनाव पैदा होता है वह राष्ट्र के लिए हानीकारक होता है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी समस्याएँ और आकांक्षाएँ होती हैं। इन्हें समझौतों से सुलझाने की अपेक्षा फूट और विघटन ही संभवनीय है, जिनका फायदा दूसरे लोग उठाते हैं और दासता की संभावना होती है। भारत के साथ प्राचीन काल से यही होता है। विभाजनवादी उपन्यासों में इन बातों का उल्लेख किया गया है।

3) **छुआ-छूत/भेदभाव** - विभाजनवादी उपन्यासों में जात-पात, छुआ-छूत, प्रान्तीयता, भाषावाद, अलगाव की प्रवृत्तियों का चित्रण है। मनुष्य के संघर्षशील व्यक्तित्व का गंभीर चित्रण इनमें पाया जाता है। जो सत्यनिष्ठ ही होता है। भारत में विभिन्न धर्मों जातियों के लोग रहते हैं। इनमें छुआ-छूत एवं भेदभाव की बीमारी पायी जाती है। लोग धर्म-सापेक्ष बनें तो विश्वशांति की भावना मानवता धर्म को अपना लेती है। लेकिन समाज में बिल्कुल इसके विपरित प्रवृत्ति पायी जाती है।

4) **राष्ट्रीयता/भावात्मक एकता** - विभाजनवादी उपन्यास भावात्मक एकता की माँग करते हैं। व्यक्ति के परस्पर संबंधों में सुधार की अपेक्षा इसमें की गयी है। भावात्मक एकता के रूप में मानवतावाद की व्याख्या इन उपन्यासों में की है। जो विश्वशांति, करूणा, राष्ट्रभावना की मांग करते हैं।

मिथ्या धर्माभिमान व्यक्ति मन को विकृत बना देता है। परिणाम स्वरूप धर्म-भेद नीति की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिसके परिणाम दोनों को तथा राष्ट्र को भुगतने पड़ते हैं।

5) **धर्म की आवश्यकता** - आदमी के लिए धर्म आवश्यक है। क्योंकि धर्म ही हमारे नीति-नियमों को संचालित करता है। लेकिन धर्मान्धता आदमी के लिए हानी कारक होती है। धार्मिक आन्दोलन के कारण हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख-ईसाई लोगों में अलगाव की प्रवृत्ति पायी जाती है। आदमी "मैं" और "मेरा धर्म" तक सीमित, संकुचित विचारों वाला बनता है। इन संकीर्ण विचारों का विभाजन पर आधारित कथावाले उपन्यास विरोध करतें हैं।

भावात्मक रूप में मानवतावाद की मांग के साथ सत्ता, न्याय, समता की भावना भी इनमें नीहित हैं।

4.3 विभाजनवादी उपन्यास और "तमस" :-

भारत विभाजन के पूर्व और बाद में सर्वसामान्य व्यक्तियों की जो असहाय स्थिति हुई, विभाजन के नाम पर जो क्रूर अत्याचार हुए, सांप्रदायिकता की भावना बढ़ रही थी उसका चित्रण अनेक लेखकों ने किया है। विभाजन की इस शोकान्तिका को लेकर बदीउज्जमाँ ने लिखा है - "हजारों वर्ष बाद इस देश में महाभारत जैसी एक और त्रासदी घटी।"[1] इस शोकान्तिका का विभिन्न दृष्टिकोणों से अभिव्यक्त करने का प्रयास तत्कालीन लेखकों ने किया हैं। इसमें यशपाल का "झूठा सच" यज्ञदत्त शर्मा का "इन्सान", गुरूदत्त का "देश की हत्या" रामानंद सागर का "और इन्सान मर गया" कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर", भीष्म साहनी का "तमस" आदि है। भीष्मजी ने प्रत्यक्ष इन घटनाओं को अपनो आँखों से देखा। उसी समय वे वहाँ मौजूद थे। इस कारण "तमस" उपन्यास का महत्व अधिक है। जनवादी लेखक ने अनेक भीषण घटनाओं को एवं समस्याओं को प्रभावी रूप में चित्रित किया है।

यशपाल का "झूठा सच" उपन्यास लोक चर्चित और प्रसिध्द उपन्यास है। देश विभाजन की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय आन्दोलन का विस्तृत चित्रण इसमें है। भीष्म साहनी का "तमस" भी इसी प्रकार का ही उपन्यास है। जिसमें सांप्रदायिक चेतना, लोगों की जड़ता एवं विवेकहीनता को जोड़ने का प्रयास लेखक ने किया है। "झूठा सच" का कथानक विशाल एवं स्थूल वर्णनात्मकता से युक्त है। इसमें राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण विशेष महत्वपूर्ण है। 1947 की क्रान्ति से देश की स्थिति हिन्दू मुसलमान संबंध, उनका रहन-सहन, देश का निर्माण तथा उन्नति, जनता की आशाएँ आदि का समग्र चित्रण इसमें है। इसमें आवश्यकता से अधिक अतिवर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। [3] लेकिन "तमस" में भीष्म जी ने संतुलित दृष्टिकोण से प्रभावी कथा का निर्माण किया है। जो पाठक को उब जाने से बचा देती है।

भारत-पाक विभाजन की समस्या को लेकर लिखा गया कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर" एक उपन्यास है। एक छोटी सी बस्ती के सूक्ष्म परिवर्तन का चित्रण इसमें प्रभावपूर्ण ढंग से किया है। करीब सौ वर्षों का इतिहास इसमें अंकीत है। सन 1857 से 1961-62 तक का चित्रण एवं परिवर्तन इस लघु उपन्यास में किया है। धर्म, सांप्रदायिकता, स्वार्थान्धता, नफरत, द्वेष, घृणा, आगजनी, मारकाट, लुटपाट का चित्रण कर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कमलेश्वरजी ने किया है। "मनुष्य जिस मिट्टी में जन्म लेता है, जिस वातावरण में बड़ा होता है, उसे वह कभी भी भूल नहीं पाता। जिस नयी बस्ती में वह जाता है वहाँ कभी भी सुख से नहीं रह पाता। एक अज्ञात सा आकर्षण अपने "मूलस्थान" के प्रति बना ही रहता है।"[2] यही कारण है कि कमलेश्वर के मुसाफिर अन्त में लौटने लगते हैं। तमस में भीष्मजी ने विशुध्द विभाजन और उससे उत्पन्न द्वेष एवं अलगाव का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है।

"भूले-बिसरे चित्र" इस उपन्यास में हिन्दू मुसलमान सांप्रदायिक भावना, अंग्रेजों की कूट नीति, काँग्रेस का विद्वेष चित्रित कर उन्हें दूर करने का प्रयास भगवतीचरण वर्माजी ने किया है। इस उपन्यास का पात्र ज्ञान प्रकाश कहता है कि -हिन्दू - मुस्लिम समस्याको अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग की स्थापना करके खड़ा कर दिया है।"[3] इसमें संकीर्ण भावना के कारण साधारण सी साधारण घटना भी भयानक रूप लेती है और सांप्रदायिकता अपना रंग निखार लेती है।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव के "बयालीस" उपन्यास में सांप्रदायिकता का चित्रण कर लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि अंग्रेज शासन के कारण ही सांप्रदायिक भावना लोगों में जागृत होती है। इसमें अन्वर मुसलमानों को, तो जागेश्वर हिन्दुओं को भड़काता है। लेकिन दिवाकर जैसा मानवतावादी पात्र इस विषय स्थिति को टालने में समर्थ होता है। पूरा गांव एकजूट होकर अंग्रेजों से लढ़ने का संकल्प करता है। अन्वर इस बात से परिचित हो जाता है कि "अंग्रेज हुक्काम के लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों दुश्मन है, दोनों से एकसा खतरा है इसलिए वे काँटे से काँटा निकाल रहे हैं। हिन्दुओं से मुसलमानों को लड़ाकर दोनों की ताकत जाया कर रहे हैं। मगर जब वे गाँव तबाह करते हैं, तब उसके सारे बाशिन्दोंपर गोलियाँ चलाते हैं, वहाँ वे हिन्दू-मुसलमान का लिहाज नहीं करते।"[4]

"देश की हत्या" यह गुरूदत्त का विभाजनपर आधारित उपन्यास है। इसमें भारतीय मुसलमानों की कूटनीति एवं विषैले कार्य व्यवहार का चित्रण है। भारतीय मुसलमान, भारतीय नागरिकता का उपभोग करते हुए भी अपने को पाक-नागरिक अनुभव करता है। हमारी काँग्रेस सरकार उनके वोट प्राप्त करने के लिए उनका ही समर्थन करती है। उपन्यासकार ने मुसलमानों की नीति पर टीका की है। एक मुसलमान पात्र अपनी जनता को भड़काने की कोशिश करता है। हिन्दू स्त्रियों के साथ संभोग चित्रण में यौन तथा भूख के दर्शन करा दिए हैं। "तमस" में हर घटना संतुलित है। उसमें भद्दापन

तथा अश्लीलता नहीं है।

"और इन्सान मर गया" यह रामानंद सागरजी का उपन्यास भारत विभाजन और उससे उत्पन्न दंगे फसाद की भीषणता को चित्रित करता है। इसमें क्रूरता, करूणा एवं वैफल्य का दर्दभरा चित्रण कर मानवता एवं मानव की हत्या का करूण चित्रण किया है। लेकिन इसमें निराशा एवं वैफल्य के वर्णन की अति होने के कारण कुछ प्रसंग उबा देने वाले है। "तमस" में इसी प्रकार की कोई भी घटना नहीं है। भीष्मजीने किसी भी प्रकार का भददाप्रदर्शन नहीं किया है।

इस प्रकार राष्ट्रवादी लेखक की भाँति "तमस" लिखा है। और सहिष्णुता की दृष्टि से अंग्रेज नीति की कटू आलोचना की है। धर्म और संप्रदायों की अर्थहीनता को स्पष्ट कर सर्वधर्म समभाव को स्वीकार किया है। इसी कारण उनकी रचना श्रेष्ठ कोटि बन गयी है।

4.4 तमस उपन्यास की त्रुटियाँ एवं समाधान :-

तमस का कथानक सांप्रदायिक समस्याओं का दस्तावेज है। यह समस्या केवल धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांप्रदायिक नहीं है, मानवीय है। क्योंकि जन साधारण की दृष्टि से लेखक ने उसे आँका है। "तमस" मनुष्य जाति का इतिहास है। आलोचकों का आरोप है कि इस उपन्यास में कल्पना की कमी है। लेकिन सच बात तो यह है कि उपन्यास निर्माण के लिए कच्चा माल उपन्यासकार के अनुभव होते हैं। भीष्मजीने यथार्थ का सशक्त चित्रण किया है जिससे उनकी प्रतिभा शक्ति का परिचय देता है। यहाँ कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं है। विभाजन के जिस कालखण्ड का चित्रण है उसे भीष्मजी ने सिर्फ देखा नहीं है बल्कि उसे जिया है। और विभाजन के लग-भग 25 वर्षों बाद "तमस" का निर्माण किया है। इसी सांप्रदायिकता के भीषण परिणाम हमने अभी अभी 1993 तक देखें हैं। यह केवल इतिहास नहीं बल्कि वर्तमान भी है। इस महान कृति में कुछ त्रुटियाँ भी है जो विद्वानों ने स्पष्ट की है।

डॉ. बान्दिवडेकरजी ने लिखा है कि -

"1. कथावस्तु में बौध्दिकता को तिलांजली दी गयी है।

2. नत्थू चमार और उसकी पत्नी के मधूर प्रेम संबंध अपने आप में उत्तेजक होनेपर भी उपन्यास के मूल स्वर से असंबध्द लगते हैं।

3. प्रकाशो और रक्खा का प्रेम - प्रसंग गलत स्थानपर रखा गया है। जो उपन्यास के स्वर को विकृत कर देता है।

4. प्रसंगों को उभारने में कल्पना के स्पर्श की अपेक्षा थी, उसका यहाँ अभाव है।

5. उपन्यास में गति बहुत ही धीमी और सपाटता अधिक है।

6. ऐसे प्रसंगों को, जिनका विस्तार में चित्रमय रूप अपेक्षित नही होता, बल्कि संक्षिप्त वर्णन ही पर्याप्त होता है, परिश्रमपूर्वक उपस्थित करना अपव्यय लगता है और यह अपव्यय 'तमस' में खूब हुआ है।"[5]

इन त्रुटियों का समाधान इस प्रकार हो सकता है, कि उपन्यास का निर्माण बुध्दि और कल्पना के आधारपर होता है, यह बात सही है लेकिन यथार्थ के बारे में जब हम कह सकते है कि आँखों देखी, भोगी घटनाओं की अनुभूति में कल्पना गौण होती है। बौध्दिक उहापोह यहाँ निरर्थक होता है। "तमस" में बौध्दिकता की वैसे कोई आवश्यकता नही है।

नत्थू और उसकी पत्नी का प्रेम प्रसंग मनोवैज्ञानिक धरातलपर सुसंबध्द ही है क्योंकि नत्थू का अपराध बोध उसके मन को दुविधाग्रस्त, चिंताग्रस्त बना देता है। वह अपने मन को समझाने की कोशिश तो करता है, लेकिन शांति नही पाती तो वह अपनी पत्नी के गदराए शरीर में खो जाना चाहता है। लेखक ने भी कहा है - "पत्नी के आलिंगनों में नत्थू खोता जा रहा था दीन-दुनिया को भूलता जा रहा था।"[6] इससे नत्थू की मानसिकता यहाँ स्पष्ट होती है। "दुख से छुटकारा पाने के लिए आदमी सबसे पहले औरत की तरफ ही मुडता है।"[7]

प्रकाशो और रक्खा का प्रेम प्रसंग उपन्यास पढ़ते समय गलत स्थानपर लगता है लेकिन इसके पीछे लेखक का कोई उद्देश्य अवश्य नजर आता है। क्योंकि प्रकाशो के बारे में आँकडाबाबू और पण्डित-पण्डितानी में चर्चा हो रही है। प्रकाशो की माँ जानती है कि वह कहाँ है। और वे दोनों उसे वापस लाने के लिए तैयार भी तो नहीं है। क्योंकि ब्राम्हणी बोल पडी - "अब हमारे पास आकर क्या करेगी जी, बुरी वस्तु तो उसके मुँह में उन्होंने पहले से ही डाल दी होगी।"

इसपर पण्डित बोला - "हमसे अपनी जान नही संभाली जाती बाबूजी, दो पैसे जेब में नही है, उसे कहाँ से खिलाएँगें, खूद क्या खायेंगे।"[8] इस वार्तालाप के तुरंत बाद प्रकाशों और अल्लारक्खा का प्रेम प्रसंग है। पहले-पहल तो प्रकाशो उसे विरोध करती रही लेकिन बाद में दोनों एक-दूसरे के साथ खुलने लगे। प्रकाशो का चरित्र समझदारी लड़की के रूप में हुआ है। वह सामने आयी परिस्थिति को स्वीकारती है। इस प्रसंग के माध्यम से भीष्मजी ने स्पष्ट किया है कि - "उसे लगता जैसे अतीत पीछे छूटता जा रहा है और वर्तमान बाँहे फैलाये उसे आलिंगन में भरने के लिए उतावला हो रहा है।"[9] इस प्रसंग से वर्तमान की स्वीकृती स्पष्ट की है। जो व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है। प्रसंग कुछ हद तक योग्य स्थानपर हैं।

उपन्यास में कल्पना न के बराबर ही है। कथानक जिस विषयपर आधारित है वह, हमारा जीवन सत्य और युग सत्य है। अगर कल्पना का पुट यहाँ दिया जाता तो कथानक उतना प्रभावी नही

बन जाता जितना अभी है। क्योंकि सांप्रदायिक भेदभाव, नफरत कोई कल्पना नही है। यहाँ कल्पना झूठी ही लगती है। इस कारण लेखक का यथार्थ ही "तमस" की सफलता है।

उपन्यास का कथानक गतिशील होना आवश्यक है। लेकिन सभी उपन्यासों में गति होनी चाहिए ऐसी बात नही है। क्योंकि घटनाओं का क्रमबध्द विवेचन उपन्यास को गति प्रदान करता है। "तमस" घटना प्रधान उपन्यास है, लेकिन घटनाएँ बिखरी हुयी उखड़ी-उखड़ी हैं। उनकी गति धीमी जरूर है, लेकिन प्रभावपूर्ण है।

अन्त में जिस प्रश्न का जिक्र बांदिवडेकरजी ने किया है, वह सही साबित होता है। लेकिन यह त्रुटि उपन्यास की सफलता में बाधक नहीं बनती।

गिरिराज किशोरजी का कहना है कि " "तमस" उपन्यास कुछ द्वीपों के अलावा पूरा बेजान और टूटा कैनवस नजर आता है। ऐसा लगता है कि रचनात्मकस्तर पर भीष्मजी चूक गये हैं। - "रिचर्ड और उसकी पत्नी लीजा कृत्रिम और अविश्वसनिय है। भीष्मजी ने अंग्रेज शासक के जिस विरोधाभास को उभारने का प्रयत्न किया है, वह तमस के गले इतनी बूरी तरह पड़ गया है कि निकाले नही निकलता। अंग्रेजी शासक कलाप्रेमी, बुध्दिजीवी होने के बावजूद व्यावहारिक, अवसरवादी और निर्दयी होता है। इसको सिध्द करने के लिए चाहे तो वह अपने प्रशासन को उस हदतक फेल नही होने देता कि उसकी अपनी स्थिति डाँवाडोल हो जाय कि उसमें उसका तबादला हो जाता है। अंग्रेज प्रशासन को संभाले रखने का पूरा ताम-झाम बनाये रखता है। ऐसे पात्रों के प्रति लेखक की आत्मीयता रचना को अप्रामाणिक बना देती है।

दूसरा प्रंसग लीजा का है। लीजा अक्सर बोअर होकर बीयर पीती रहती है। बीअर की शौकीन लीजा जो बीयर रोजाना पीती थी वह बीयर न होकर शराब से ज्यादा कुछ थी। बीयर पीकर सोफे पर पेशाब करने की आदत लीजा को थी। बीयर पीकर एक ऐसी महिला का बार-बार पेशाब करना पूरे उपन्यास की चूल हिला देता है। हालाँकि बीयर गुर्दों को साफ करती है और पेशाब लाती है, पर क्या यह बात ऐसी महिलापर लागू होती है?

मारकाट के समय गुरूद्वारे में की गयी मोर्चे बंदी का विवरण तर्क संगत नही लगता। यह विवरण मुगल कालीन, प्रभावशाली और रोमांटिक हो गया है। वह अंचल के सिक्खों की मानसिकता को उजागर कर देता है।

उपन्यास की साहित्यिकता और तथ्यात्मकता पर भी कई प्रश्न चिन्ह लगते है। देवदत्त का चरित्र ऐसा लगता है कि उसका यह चरित्र कुछ मान्यताओं के आधारपर निर्मित किया गया है। देवदत्त का रोला पार्टी द्वारा प्रेरित था या व्यक्तिगत? अगर वह पार्टी द्वारा प्रेरित था तो पार्टी के सदस्यों

ने इस प्रकार की हिंसा रूकवाने का प्रयत्न क्यों नही किया? अगर यह पार्टी का योजनाबध्द कार्यक्रम था तो प्रकारांतर से प्रस्तुत होना चाहिए था। देवदत्त के अधूरे साक्षात्कार से लेखक की अदूरदर्शिता ने पार्टी की योजना को एवं देवदत्त के चरित्र को अविश्वसनीय बना दिया है। अमन कमेटी के सेक्रेटरी के लिए देवदत्त का नाम प्रस्तावित होता है, तो 'तमस' का एक चरित्र कहता है - "मैं पुछता हूँ क्या सरकार के दुम छल्ले, कौम के गद्दार कम्युनिस्ट ही इस काम के लिए रह गये हैं? यह वाक्य कम्युनिस्ट पार्टी के विरोध में जाता है।

उपन्यासों में सामान्य सत्यों का निर्वाह नही हो पाया है। एक छोटीसी बात सामने आती है कि अमन कमेटी के लिए अन्य हिन्दू का नाम आने पर 'ताईद' 'ताईद' चिल्लाते है। शायद इसलिए कि मुस्लिम लीग में होते हुए भी उनकी आस्था उसमें थी। यह प्रकरण अवांछनीय और अनावश्यक लगता है।

इस तरह भीष्मजी पूरे उपन्यास को ऊपर उठाने में असफल रहे हैं। कही पर यह उपन्यास रचनात्मक उंचाई तक उठता नजर आता है तो कही पर डूबता।"[10]

समाधान :-

अंग्रेजोंने भारत वर्ष में 200 वर्षोंतक राज किया उसके पीछे उनका मूल उद्देश्य इस देश का अर्थिक शोषण ही था। प्रशासक बुध्दिजीवी थे। व्यावहारिकता और अवसरवादी वृत्ति उनके जीवन का एक पहलु था। रिचर्ड ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। वह लंडन से निर्णित होकर आनेवाली नीति क्रियान्वित करता है। इसमें तटस्थता है। भीष्मजी ने उसके प्रशासकीय रूप की प्रशंसा की है लेकिन उसका असफल दाम्पत्य जीवन भी चित्रित किया है। वह कहता है "डैम दिस कन्ट्री, डैम दिस लाईफ।"[11] यहाँ लेखक ने केवल एक ही पहलू नही तो दो पहलूओं का चित्रण कर अंग्रेजों की सफलता और असफलता का संतुलित चित्रण किया है। ऐसी बातों से रचना में कोई अप्रामाणिकता नही आई है।

लीजा का शराब पीना, सोफे पर पेशाब करना आदि बातों का असंगत चित्रण जरूर है। लेकिन मेरे खयाल से भीष्मजी ने रिचर्ड का असफल दाम्पत्य जीवन स्पष्ट करने के लिए लीजा का ऐसा व्यक्तित्व हमारे सामने स्पष्ट कर दिया होगा। लीजा के मनमें इस देश के लोगों के प्रति सहानुभूति है। उसका स्त्री हृदय इस अंग्रेज नीति के कारण उब गया होगा अकेलेपन के कारण उसने शराब को अपनाकर नशे में रहना पसंद किया।

गुरूद्वारे में शस्त्रास्त्रों का और मोर्चेबंदी का विवरण तर्कसंगत ही है। सिक्खों में शस्त्र को शास्त्र से भी श्रेष्ठ समझा जाता हैं। शस्त्रों के कारण ही आदमी अपनी रक्षा कर सकता है। उनके

धर्मगुरू ने ही शस्त्र को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। और मुसलमानों ने सिक्खों पर जो अत्याचार किए वह प्रसिध्द हैं।

देवदत्त का चरित्र वैसे तो पार्टी द्वारा प्रेरित नही लगता वह तो व्यक्तिगत ही है। यहाँ पार्टी की सक्रियता न के बराबर ही है। कम्युनिस्ट पार्टी में जो व्यक्ति थे वह गद्दार और दो टांगों में बात अड़नेवाले थे यह सत्य ही है। क्योंकि काँग्रेस और कम्युनिस्ट इन दो पार्टियों में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष भाग लेनेवाले भी कई सदस्य हैं। जिनका जिक्र 'तमस' में भीष्मजी ने किया है।

"तमस" का कथानक सामान्य सत्यों का दस्तावेज है। भीष्मजी ने समाज-सत्य, युग-सत्य, वर्तमान-सत्य का निर्वाह किया है। हिन्दुओं के लिए विरोध करनेवाले मुसलमान जैसे हैं वैसे ही हिन्दुओं की मदद करनेवाले भी मुसलमान हैं। जैसे शाहनवाज, नूरइलाही, बख्शीजी। हिन्दू-मुसलमानों का परिचय देते हुए नूरइलाही और लाला लक्ष्मीनारायण की मित्रता के बारे में कहा है - "अन्दर ही अन्दर दोनों कट्टर पंथी थे, पर खेल - बड़े हुए थे इसलिए दोस्ती भी थी, मेल - मिलाप भी था, दुःख-सुख में थोड़ा बहुत शरीक भी होते थे। शेख नूरइलाही कहता है "हम सब को यही रहना है। जनून सिर पर चढ़ जाये लेकिन सच बात तो यह है कि हम सब को यही रहना है। मामूली लड़ाई-झगड़े की कोई बात नही। यों तो घर के बरतन भी एक दूसरे से ठहक जाते हैं, हमसायों के आपस में झगड़े होते रहते हैं। हमसाया तो अपना दायाँ बाजू होता है।"[12]

क्या यह वक्तव्य अवांछनीय है? अनावश्यक है? "नहीं" दो भाई - भाई आपस में क्या कभी झगड़ते नहीं? हिन्दुओं का अमर भारत है, तो क्या उनमें एकता है? हम कभी भी यह नहीं स्वीकार करेंगे कि यह प्रकरण अवांछनीय है? सच तो यह है कि यह प्रकरण प्रशंसनीय ही है। इन दो पात्रों से भीष्मजी ने स्पष्टीकरण दिया है - "अन्दर ही अन्दर वैमनस्य भी था, घृणा भी थी, पर दोनों व्यापारी थे, व्यवहार कुशल थे, अपने लिए एक दूसरे की जरूरत को समझते थे।"[13] इससे स्पष्ट है कि यह भेद-भाव निरर्थक है। हम एक दूसरे के साथ समझ-बुझ के साथ रहते हैं तो भाई-चारा होगा, समाज में शांति होगी। इस तरह "तमस" एक श्रेष्ठ उपन्यास है। जो मानव धर्म को श्रेष्ठ मानता है।

4.5 निष्कर्ष :-

साहित्य के माध्यम से लेखक समाज जीवन का वास्तविक चित्रण करता है यह बात भीष्मजी ने "तमस" उपन्यास के द्वारा स्पष्ट की है। भारत विभाजन हमारे देश का एक ऐतिहासिक करूण अध्याय है। जिन्हों ने इसे आँखों देखा है - बिता है उनमें भीष्मजी भी है। यशपाल, रामानन्द सागर, गुरूदत्त, भीष्मजी पंजाब प्रांत की ही देन हैं। उन्हें विभाजन के परिणाम प्रत्यक्ष भुगतने पड़े।

इस कारण उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोण से शोकान्त गाथाओं को अभिव्यक्त किया है। मानव और मानवता की क्रूरता का दर्दभरा चित्रण किया है। विभाजनकालीन समस्याओं को प्रभावपूर्ण रूपमें चित्रित कर मानव की दानवता का रूप स्पष्ट किया है।

भारत विभाजन का प्रमुख कारण है - अंग्रेज नीति। अंग्रेज एवं ब्रिटिश साम्राज्य केवल अपने स्वार्थवश हिन्दुस्थान पर राज कर रहे थे। हिन्दू जनता को इसमें गुलामी का जीवन व्यतीत करना पड़ा। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कारण भारतीय जनता के मन में नवजागणर निर्माण हुआ। जिसके कारण उनके मन में असंतोष फैला और स्वातंत्र्य की मांग होने लगी। लेकिन इसी समय अंग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमानों में फूट डालने की कामयाब कोशिश की और भारत-पाक के रूपमें हिन्दुस्थान का विभाजन हुआ। यह संप्रदायिकता की भावना हिन्दू और मुसलमानों में इतनी प्रबल हो उठी कि धार्मिक अहंकार, राग, द्वेष, घृणा, लालच तथा हत्याओं में सारा भारत ध्वस्त हो गया। जिसके भीषण परिणाम भुगतने पड़े।

संकीर्ण विचारों के कारण आदमी के मन में जो तनाव निर्माण होता है वह देश के लिए हानीकारक होता है। जिनका फायदा अन्य देशों के लोग उठाते हैं। विभाजनवादी उपन्यासों में इसका चित्रण कर साहित्यकारों ने विश्वशांति और उसकी उपयोगिता सिध्द की है। कुछ बातों के लिए धर्म की आवश्यकता होती है क्योंकि धर्म के कारण आदमी का जीवन संतुलित बनता है। लेकिन धर्मान्धता आदमी की शांति खो देती है। इसी कारण मानवता धर्म, सर्व धर्म समभाव तथा शांति की मांग इन उपन्यासों में की गयी है।

भीष्मजी का "तमस" उपन्यास विभाजन के दुष्परिणाम को स्पष्ट कर, अंग्रेज नीति की ओर संकेत कर मानवता की मांग करता है। राष्ट्रवादी लेखक की भाँति उन्होंने यथार्थ उपन्यास का निर्माण किया है। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अंग्रेज आदि का मूल्यांकन कर भारतीय संस्कृति में विनाशकारी तत्वों की कुटिलता को चित्रित कर संकीर्ण वृत्ति का उद्घाटन किया है। अन्तमें उन्होंने सहिष्णुता का पक्ष लिया है। अंग्रेज राजनीति की कटु आलोचना कर काँग्रेस और अन्य राजनीतिक दलों की भौतिकता को चित्रित किया है। धर्म और संप्रदायों की अर्थहीनता को स्पष्ट कर, धर्म की सर्व व्यापकता को स्वीकार किया है।

भीष्मजी की कुशलता इतनी है कि उन्होंने किसी भी प्रकार की घटना का अतिरंजक एवं भद्दा प्रदर्शन नही किया है। उन्होंने संतुलित दृष्टि से प्रत्येक घटना का मार्मिक चित्रण किया है, जो बहुत ही प्रभावपूर्ण है। इसमें ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक घटनाओं का

गुंफन कलात्मकता से किया है। आज वर्तमान में भी हम पास-पड़ोस में इसी प्रकार की घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव लेते ही है। अभी हाल ही में घटी अयोध्या तथा बम्बई की घटनाएँ ऐसी ही हैं। इस प्रकार 'तमस' का कथानक पाठकों के हृदय पर निजत्व स्थापित करने में काफी सक्षम है। इसी कारण यह रचना श्रेष्ठ कोटि की बन गयी है।

- - -

4.6 **संदर्भ सूची :**

1. महिपसिंह - "संचेतना" जनवरी-मार्च 1976 पृ. 27
2. डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे "हिन्दी उपन्यास विविध आयाम" पृ.145 (सूर्यनारायण रणसुभे का लेख)
3. भगवतीचरण वर्मा "भूले बिसरे चित्र" पृ. 240
4. प्रतापनारायण श्रीवास्तव "बयालिस" पृ. 217 या (हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासोंका अनुशीलन किताब से)
5. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर "धर्मयुग" (साप्ताहिक) 22 दिसंबर 1974 पृ. 18
6. भीष्म साहनी "तमस" पृ. 121
7. वही पृ. 108
8. वही पृ. 267
9. वही पृ. 270
10. गिरिराज किशोर "कथ अकथ" "तमसः कुछ बिखरे द्वीप" (लेख) पृ. 43-44
11. भीष्म साहनी "तमस" पृ. 251
12. वही पृ. 274
13. वही पृ. 274

- - - - - - -